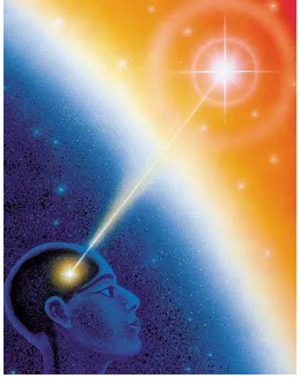

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - योगबल से ही तुम्हें अपने विकर्मों पर जीत पाकर विकर्माजीत बनना है"

इस प्लेनमें दो- चार गुजरात के bks भी थे क्या उन्हों को ये संकल्प में भी होगा कि अभी अगले कुछ मिनटों में उनके इस शरीर का अंत हो जाएगा।
परीक्षा के दौरान शिक्षक साक्षी हो जाता है।
और अभी अंतिम समय समीप होने कारण, परीक्षा शुरू हो चुकी है यही मानकर पुरुषार्थ करना है।
और इसीलिए मीठे बाबा कहते है कि हर घड़ी अंतिम समझ कर पुरुषार्थ करो।

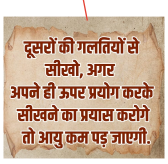

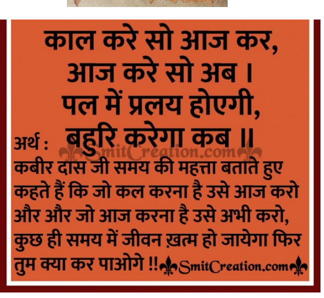

प्रश्नः- कौन सा ख्याल पुरुषार्थी बच्चों को भी पुरुषार्थ हीन बना देता है?

उत्तर:- अगर किसी पुरुषार्थी को यह ख्याल आया कि अभी तो बहुत समय पड़ा है, पीछे गैलप कर लेंगे। परन्तु बाप समझाते हैं बच्चे मौत का समय निश्चित थोड़ेही है, कल-कल करते मर जायेंगे तो कमाई क्या होगी इसलिए जितना हो सके श्रीमत पर अपना और दूसरों का कल्याण करते रहो। समय का सोचकर पुरुषार्थ-हीन मत बनो।

May I have your Attention Please..!

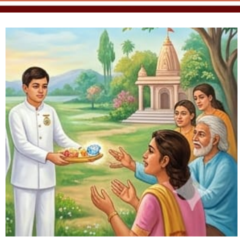

गीत:-ओम् नमो शिवाए... Click

ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब जूठी माया है।
जो अपना सब कुछ छोड़ चला,
उसने ही तुमको पाया है।
जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

दोनों हाथों में लड्डू चाहने वाले ...
एक तरफ भौतिक दुनिया (व्यक्ति,वैभव,वस्तु, नाम-मान-शान ईत्यादि) की लालसा या आकर्षण मात्र भी हो और
दूसरे तरफ भगवान को भी पाना हो।
तो वो कभी भी बाबा/भगवान को पा नहीं सकता। - ये पक्का समझ लो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

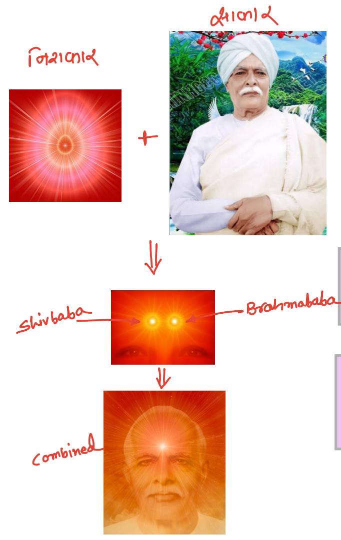

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। यह तो बच्चों को समझाया गया है कि निराकार, साकार बिगर कोई कर्म कर नहीं सकते। पार्ट बजा नहीं सकते। रूहानी बाप आकर ब्रह्मा द्वारा रूहानी बच्चों को समझाते हैं। योगबल से ही सतोप्रधान बनना है और विश्व का मालिक बनना है। यह बच्चों की बुद्धि में है कि कल्प-कल्प बाप आकर राजयोग सिखाते हैं - ब्रह्मा द्वारा। और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं अर्थात् मनुष्य को देवता बनाते हैं। मनुष्य जो देवी-देवता थे, पावन थे सो अब बदल 84 जन्मों बाद पतित बन पड़े हैं, भारत जब पारसपुरी था तो पवित्रता सुख-शान्ति सब था। यह 5 हजार वर्ष की बात है। तिथि तारीख सहित बाप सारा हिसाब-किताब समझाते हैं। इनसे ऊंच तो कोई है नहीं। सृष्टि वा झाड़ जिसको कल्प वृक्ष कहते हैं, उनके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही बैठ समझाते हैं। भारत का जो देवी-देवता धर्म था, वह अब प्राय: लोप हो गया है। सिर्फ चित्र जरूर हैं। भारतवासी जानते हैं कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। भल शास्त्रों में भूल कर दी है, जो श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। बाप ही आकर भूले हुए को रास्ता बताते हैं। उनको कहते हैं मुक्ति-

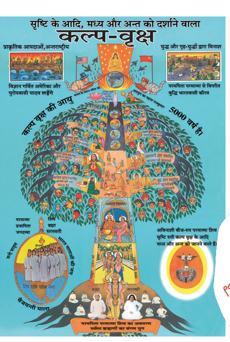

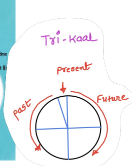

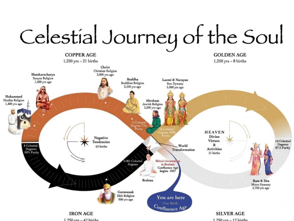

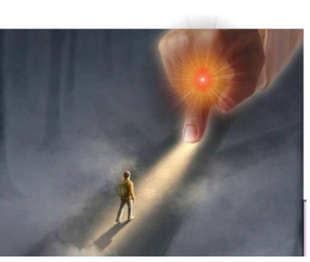

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

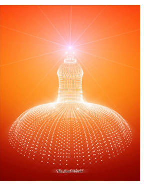
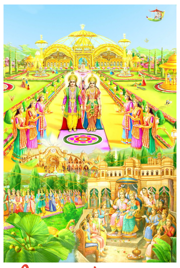

जीवनमुक्ति का गाइड। सर्व को मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाला एक ही है। भारत जब जीवनमुक्त है तो बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में हैं, इसलिए उनको कहा जाता है मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता। रचयिता एक ही है। सृष्टि भी एक ही है, वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी एक ही है, जो रिपीट होती है। सतयुग त्रेता, द्वापर, कलियुग... फिर होता है संगमयुग। कलियुग है पतित, सतयुग है पावन। सतयुग होगा, तो पहले जरूर कलियुग का विनाश होगा। विनाश के पहले स्थापना होगी। सतयुग में स्थापना नहीं होगी।

Simple Math..

भगवान आयेगा तब जब पतित दुनिया को पावन बनाना है। अब बाप सहज युक्ति बताते हैं कि देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ देही-अभिमानी बन बाप को याद करो। बाप है भक्तों को फल देने वाला। भक्तों को ज्ञान देते हैं - पावन बनने के लिए। सबको पावन बनाने वाला है योग। ज्ञान सागर मुख से आकर ज्ञान सुनाते हैं। पतितों को पावन बनाते हैं। इस समय सब आत्मायें पतित बनी हुई हैं इसलिए बाप को बुलाते हैं क्योंकि बाप बिगर तो कोई पावन बना न सके। अगर पतित-पावनी गंगा है तो फिर पतित-पावन सीताराम कहकर क्यों बुलाते हो। बुद्धि

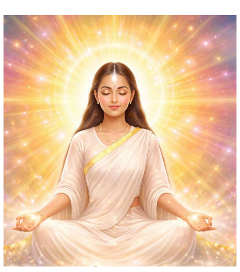

Exclusive Authority of Shiv baba

Points: ज्ञान योग धारणा से M.imp.

Simple Logic

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

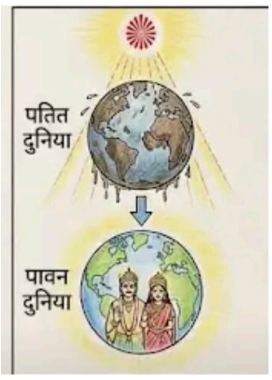

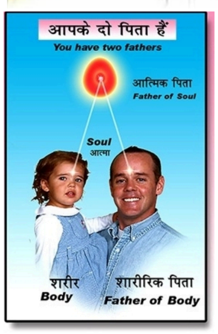

8 अरब की आबादी तक का सफर

आबादी	साल	कितने वर्ष लगे
1 अरब	1804	पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए
1 से 2 अरब	1804 से 1927	123 साल लगे
2 से 3 अरब	1927 से 1960	33 साल
3 से 4 अरब	1960 से 1974	14 साल
4 से 5 अरब	1974 से 1987	13 साल
5 से 6 अरब	1987 से 1999	12 साल
6 से 7 अरब	1999 से 2011	12 साल
7 से 7.9 अरब	2011 से 2022	11 साल

15 नवंबर 2022 को होंगे आठ अरब लोग

Point to ponder deeply...

More than 700 crore Souls descended from परमधाम in last 222 years only

[2026 – 1804 = 222 years]

अब सोचो की इनको देने वाला कौन..?

बाबा के Right hands हम है...

तो हे महावीर, अब तो जागो....

हे रहमदिल... अब तो रहम करो...

नहीं आयेंगे वो...?

कहती है कि परमपिता परमात्मा जरूर फिर नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश के लिए आयेगा। कल्प वृक्ष की आयु भी होती है, जो चीज़ जड़ जड़ीभूत हो जाती है, उनको ही तमोप्रधान कहते हैं। न्यु वर्ल्ड नहीं कहेंगे, यह है आइरन एजेड वर्ल्ड। यह सब बातें बुद्धि में बिठाई जाती हैं औरों को समझाने के लिए। घर-घर सन्देश देना है। ऐसे नहीं कहना है कि परमात्मा आया है। युक्ति से समझाना है, बोलो दो बाप हैं लौकिक और पारलौकिक। दु:ख के समय पारलौकिक बाप को ही याद किया जाता है। सुखधाम में कोई परमात्मा को याद नहीं करता। सतयुग, लक्ष्मी-नारायण के राज्य में सुख शान्ति पवित्रता सब कुछ था। बाप का वर्सा मिल गया फिर पुकारें क्यों? वहाँ सुख ही सुख है। बाप ने दु:ख के लिए दुनिया नहीं रची। यह बना बनाया खेल है, जिनका पार्ट पिछाड़ी में है, 2-4 जन्म लेते हैं, बाकी समय शान्तिधाम में रहेंगे। बाकी खेल से कोई निकल जाये, यह हो नहीं सकता। एक दो जन्म लिया बाकी समय जैसे मोक्ष है, आत्मा पार्टधारी है। कोई का ऊंचा पार्ट है, कोई का कम। गाया हुआ है ईश्वर का अन्त कोई पा न सके। ईश्वर ही आकर

Points: 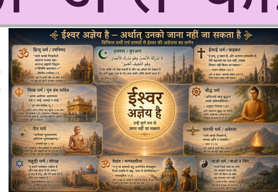 धारणा सेवा M.imp.

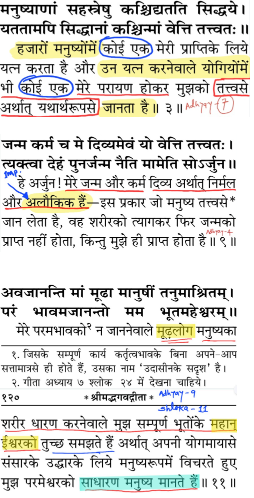
मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥
मेरे परमभावको[2] न जाननेवाले मूढ़लोग मनुष्यका

१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप सत्तामात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'उदासीनके सदृश' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिये।

१२० * श्रीमद्भगवद्गीता *

शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं॥ ११॥

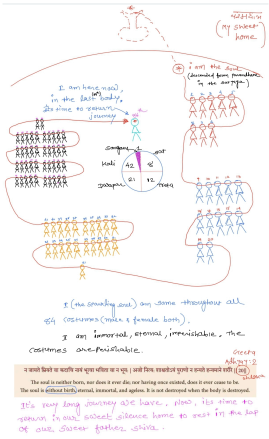

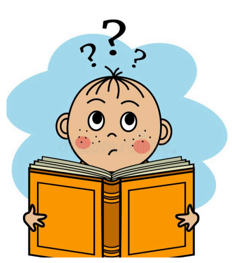

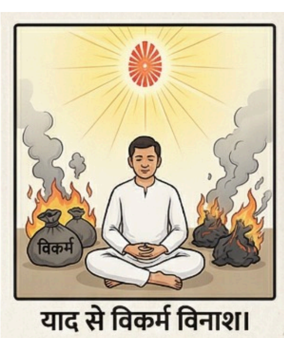

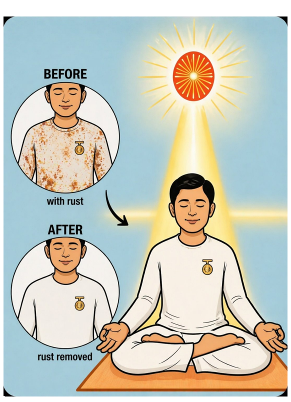

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। बाप समझाते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। मैं जिस तन में प्रवेश करता हूँ, यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं, मैं इनके 84 जन्मों की कहानी सुनाता हूँ, कोई भी पार्ट चेन्ज नहीं हो सकता। यह बना बनाया खेल है। यह किसकी बुद्धि में बैठता नहीं। बुद्धि में तब बैठे जब पवित्र होकर समझें। अच्छी रीति समझने के लिए 7 रोज़ भट्ठी में पड़े। भागवत आदि भी 7 रोज़ रखते हैं। कोई 7 दिन में अच्छी रीति समझ लेते हैं, कोई तो कह देते हैं कि हमारी बुद्धि में कुछ भी नहीं बैठा। ऊंच पद नहीं पाना होगा तो बुद्धि में कैसे बैठेगा। अच्छा फिर भी कल्याण तो हुआ ना। प्रजा तो ऐसे ही बनती है, बाकी राज्य भाग्य लेने में मेहनत है। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अब करो वा न करो। परन्तु बाप का डायरेक्शन है, प्यारी वस्तु को याद किया जाता है ना। भक्ति मार्ग में भी कहते हैं कि हे पतित-पावन आओ। अब वह मिला है। कहते हैं मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। बादशाही ऐसे ही थोड़ेही मिल जायेगी। याद में ही थोड़ी मेहनत है। बहुत याद करने वाले ही कर्मातीत अवस्था को

Point to be Noted

Choice is All yours...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समझा?

पा लेते हैं। पूरा याद न करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। योगबल से ही विकर्माजीत बनना है। लक्ष्मी-नारायण इतने पवित्र कैसे बनें? जबकि कलियुग के अन्त में कोई भी पवित्र नहीं है। इस समय गीता ज्ञान का एपीसोड रिपीट हो रहा है। शिव भगवानुवाच, भूलें तो सबसे होती रहती हैं। मैं आकर सबको अभुल बनाता हूँ। भारत के जो भी शास्त्र हैं, यह सब हैं भक्ति मार्ग के। बाप कहते हैं - मैने जो कुछ कहा था वह किसको भी पता नहीं है। जिन्होंने मेरे द्वारा सुना, उन्होंने 21 जन्मों की प्रालब्ध पाई फिर ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। तुम ही चक्र लगाए फिर यह ज्ञान सुन रहे हो।

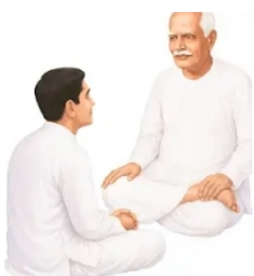

चढ़ाओ नशा...

मैं कौन, मेरा कौन...!

तुम जानते हो हम सैपलिंग लगा रहे हैं, मनुष्य से देवता बनाने का। यह है दैवी झाड़ का सैपलिंग। वे लोग तो उन झाड़ों का कलम लगाते रहते हैं। बाप आकर कान्ट्रास्ट बताते हैं। तुम दिखाते भी हो कि उन्हों का क्या प्लैन है, तुम्हारा क्या प्लैन है। वह फैमिली प्लैनिंग करते हैं कि दुनिया बढ़े नहीं। बाप

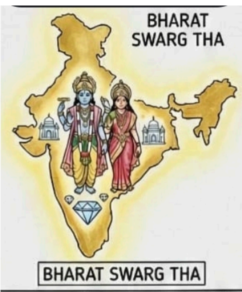

तो बहुत अच्छी बात बताते हैं कि अनेक धर्म विनाश हो जायेंगे और देवी-देवता धर्म की फैमिली स्थापन हो जायेगी। सतयुग में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म की फैमिली थी और अनेक फैमिलियाँ थी ही नहीं। इस समय भारत में देखो कितनी फैमिलीज़ हैं। गुजराती फैमिली, सिक्ख फैमिली.. वास्तव में भारत की एक ही फैमिली होनी चाहिए। बहुत फैमली होंगी तो जरूर खिटपिट होगी। फिर सिविलवार हो जाती है। फैमिली में भी सिविलवार हो जाती है। जैसे क्रिश्चियन की आपस में फैमली है तो उन्हों में भी दो भाई आपस में नहीं मिलते। फ्रैक्शन हो जाती है। पानी भी बाँटा जाता है। सिक्ख धर्म वाले समझते हैं हम अपने धर्म की फैमिली को जास्ती सुख देवें। रग जाती है ना। माथा मारते रहते हैं। जब अन्त का समय आता है तब आपस में लड़ने लग पड़ते हैं। विनाश तो होना ही है। ढेर बॉम्ब्स बनाते रहते हैं। बड़ी लड़ाई जब लगी थी तो दो बॉम्ब्स छोड़े थे। अभी तो ढेर बनाये हैं। समझ की बात है ना। तुमको समझाना है कि यह वही महाभारत लड़ाई है। बड़े-बड़े लोग भी कहते हैं अगर लड़ाई को बन्द नहीं किया तो सारी दुनिया को आग

As Certain as Death

As Certain as Death

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लग जायेगी। तुम जानते हो आग तो लगनी ही है।

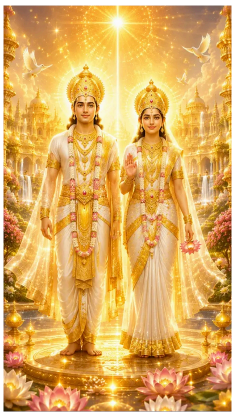

बाप आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। राजयोग है ही सतयुग का। जो देवता धर्म प्राय:लोप हो गया है वह फिर स्थापन करते हैं। अब कलियुग है इनके बाद सतयुग चाहिए। अब कलियुग विनाश के लिए यह महाभारी महाभारत लड़ाई है। यह सब अच्छी रीति धारण कर समझाना है क्योंकि मनुष्य हैं आसुरी सम्प्रदाय, इसलिए खबरदारी रखनी है। कल्प पहले मुआफिक जो विघ्न पड़ने होंगे वह पड़ेंगे जरूर। यह बना-बनाया ड्रामा है। हम बांधे हुए हैं। याद की यात्रा कभी भूल नहीं जानी चाहिए। गीत है ना - रात के राही थक मत जाना.... इनका अर्थ कोई समझ न सके। रात पूरी हो दिन आने वाला है। आधाकल्प पूरा हुआ, अब सुख शुरू होगा। बाप ने मनमनाभव का अर्थ भी समझाया है, सिर्फ गीता में श्रीकृष्ण का नाम डालने से वह ताकत नहीं रही है। श्रीकृष्ण को कभी सर्वशक्तिमान् नहीं कह सकते। वह तो पूरे 84 जन्म लेते हैं इसलिए गीता में वह

भगवानुवाच गीता का भगवान शिवबाबा है, न कि श्रीकृष्ण, यह समझना है।

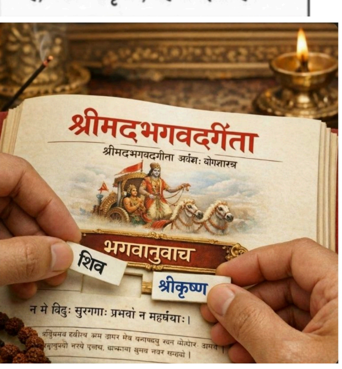

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

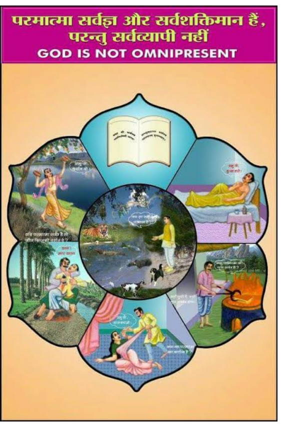

ताकत नहीं रही है। अब हम सब मनुष्य-मात्र का कल्याण कर रहे हैं। कल्याणकारी जो बनेगा उनको वर्सा मिलेगा। याद की यात्रा बिगर कल्याण हो न सके। इस समय सब विपरीत बुद्धि हैं। कह देते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। तुमको समझाना है कि वह बेहद का बाप है। बेहद के बाप से ही भारतवासियों को बेहद का वर्सा मिला है। भारतवासियों ने ही 84 जन्म लिए हैं। अभी तुम प्रैक्टिकल में देखते हो कि ज्ञान तो तुम सुनते ही रहते हो। दिन प्रतिदिन तुम्हारे पास बहुत नये-नये आते रहेंगे। अब ही अगर बड़े-बड़े लोग आ जाएं फिर तो देरी न लगे। झट आवाज निकल जाए। हंगामा हो जाए इसलिए युक्ति से धीरे-धीरे चलता रहता है। यह है ही गुप्त ज्ञान, किसको पता भी नहीं पड़ता कि यह क्या कर रहे हैं। भक्ति में है दु:ख, ज्ञान में है सुख। रावण के साथ तुम्हारी युद्ध कैसी है, यह तो तुम ही जानो और कोई जान न सके। भगवानुवाच, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो मुझे याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे। पवित्र बनो तो साथ ले जायेंगे। मुक्ति तो सबको मिलनी है। सब रावणराज्य से मुक्त हो जायेंगे। तुम कहते हो कि शिव शक्तियाँ ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ ही

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

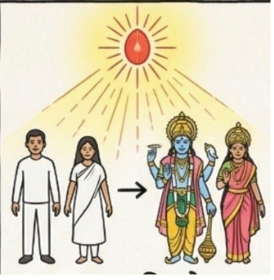

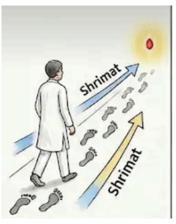

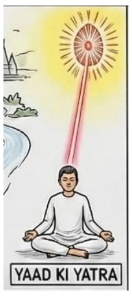

Attention Please..!

Self Checking

Swamaan

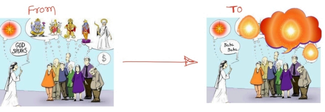

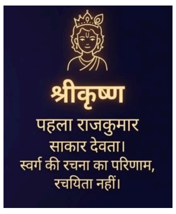

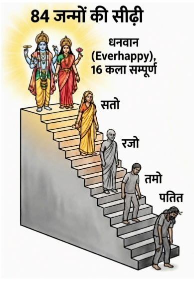

श्रेष्ठाचारी दुनिया स्थापन करेंगे। परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर कल्प पहले मुआफिक। 5 हजार वर्ष पहले श्रेष्ठाचारी दुनिया थी, यह बुद्धि में बिठाना चाहिए। मुख्य प्वाइंट्स जब बुद्धि में धारण होंगी तब याद की यात्रा में रहेंगे। कोई समझते हैं अभी टाइम पड़ा है, पीछे पुरुषार्थ कर लेंगे। परन्तु मौत का नियम थोड़ेही है। कल मर जायें तो! इसलिए ऐसे मत समझो अन्त में गैलप कर लेंगे। यह ख्याल और ही गिरा देगा। जितना हो सके पुरुषार्थ करते रहो। श्रीमत पर हर एक को अपना कल्याण करना है, अपनी जाँच करनी है कि कितना बाप को याद करता हूँ और कितनी बाप की सर्विस करता हूँ। रूहानी खुदाई खिदमतगार तुम हो ना। तुम रूहों को सैलवेज करते हो। रूह पतित से पावन कैसे बनें, उसकी युक्ति बताते हैं। श्रीकृष्ण को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। वह तो प्रिन्स था, उसने प्रालब्ध भोगी, उनकी महिमा की भी दरकार नहीं है। देवताओं की महिमा क्या करेंगे! हाँ बर्थ डे तो सब मनाते हैं। यह कॉमन बात है। बाकी उन्होंने क्या किया, सीढ़ी तो उतरते ही आते हैं। अच्छे वा बुरे मनुष्य तो होते हैं। हर एक का पार्ट अपना-अपना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

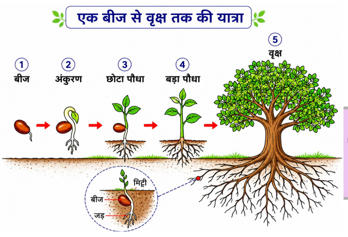

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

यह है बेहद की बात। मुख्य टाल टालियां गिनी जाती हैं। बाकी पत्ते तो अनेक हैं। उनको कहाँ तक तुम गिनती करते रहेंगे। बाप समझाते रहते हैं, बच्चे मेहनत करो, सबको बाप का परिचय दो तो बाप से बुद्धि योग जुट जाए। बाप कहते हैं - सभी को कहो - पवित्र बनो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। दुनिया को थोड़ेही पता है कि महाभारत लड़ाई से क्या होगा। यह यज्ञ रचा है क्योंकि नई दुनिया चाहिए। हमारा यज्ञ पूरा होगा तो सब इस यज्ञ में स्वाहा होना है। अच्छा!

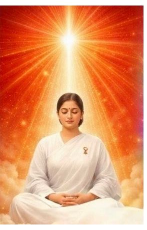
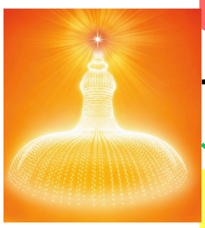

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सच्चा-सच्चा खुदाई खिदमतगार बन सभी रूहों को सैलवेज़ करने की सेवा करनी है। सबका कल्याण करना है। सबको बाप का परिचय देना है।

2) प्यारे ते प्यारी वस्तु (बाप) को प्यार से याद करना है। बने-बनाये ड्रामा पर अटल रहना है। विघ्नों से घबराना नहीं है।

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: मनमनाभव की विधि द्वारा मनरस की स्थिति का अनुभव करने और कराने वाले सर्व बन्धनमुक्त भव

Finale Achievement

जो बच्चे लोहे की जंजीरे और महीन धागों के बंधन को तोड़ बन्धनमुक्त स्थिति में रहते हैं वे 1 कलियुगी स्थूल वस्तुओं की रसना वा 2 मन के लगाव से मुक्त हो जाते हैं।

उन्हें देह-अभिमान वा देह के पुरानी दुनिया की कोई भी वस्तु जरा भी आकर्षित नहीं करती।

जब कोई भी इन्द्रियों के रस अर्थात् विनाशी रस के तरफ आकर्षण न हो तब अलौकिक अतीन्द्रिय सुख वा मनरस स्थिति का अनुभव होता है।

इसके लिए निरन्तर मनमनाभव की स्थिति चाहिए।

constant

निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
निरन्तर का संधि विच्छेद निः + अन्तर होता है।

Definition of

स्लोगन:- सच्ची सेवा वह है जिसमें 1 सर्व की दुआओं के साथ 2 खुशी की अनुभूति हो।

Points: ज्ञान योग धारणा p.

09-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

दुनिया में भी दान को पुण्य समझते हैं, आप दाता के बच्चे सदा दान करने वाली पुण्य आत्मायें हो।

आप किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति लेने की कामना नहीं कर सकते। ये तो पक्का कर लो..

Transactional Attitude

यह आत्मा कुछ दे तो मैं दूँ, वा यह भी कुछ करे तो मैं भी करूँ, ऐसी हद की कामना नहीं रखना।

दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह, सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा बनो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.10 वरदान दो :

अमृतवेले चारों ओर के तमोगुणी वातावरण व वायब्रेशन के वायुमण्डल में प्राय: लोप स्थिति का समय होता है अर्थात् तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। ऐसे समय पर सहज ही पुकार सुनकर उपकार होता है। पुकार सुनना भी सहज है और उपकार करना भी सहज है। वरदान लेना भी सहज है और दान देना भी सहज है क्योंकि वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर, आप सर्व

समझा?

ये पक्का समझ लो..

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

Point to be Noted

वरदानी आत्माओं की स्वयं की स्थिति भी, बाप की विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण बाप के समान सम्पन्न और दातापन की होती है। ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञानसूर्य की लाइट और माइट की किरणें विशेष बच्चों को वरदान के रूप में देते हैं। इसलिए इस समय को 'ब्रह्म-मुहूर्त' का समय कहते हैं।

पुछो अपने आप से...

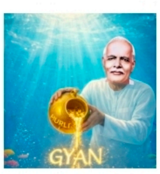

क्या इस समय पर आप स्वयं का सारे दिन की श्रेष्ठ स्थिति वा कर्म का 'मुहूर्त' निकालते हो? जैसा मुहूर्त निकालना चाहो वह निकाल सकते हो। साथ-साथ अव्यक्त वतनवासी ब्रह्मा बाप भाग्यविधाता के रूप में अमृतवेले भाग्य अर्थात् अमृत बाँटते हैं। जितना भाग्य रूपी अमृत ब्रह्मा बाप द्वारा लेना चाहो वह ले सकते हो। लेकिन बुद्धि रूपी कलश अमृत धारण करने के योग्य हो। किसी भी प्रकार का विघ्न या रुकावट न हो। तो ऐसे समय पर लेना और देना साथ-साथ चलता है। वरदानी और महादानी दोनों पार्ट साथ-साथ चलते हैं। ऐसी स्थिति में स्थित होने वाली उपकारी आत्माओं को, आत्माओं की पुकार भी स्पष्ट सुनाई देगी। इतनी स्पष्ट सुनाई देगी जैसे कानों में कोई बात कह रहा है। भक्तों की आवाज़ भी सुनायी देगी। ऐसे समझेंगे जैसे यहाँ सचमुच कोई बुला रहे हैं। अमृतवेले विशेष (1) भक्तों की पुकार सुनो, (2) दु:खी आत्माओं के दु:ख की पुकार सुनो, (3) प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज़ सुनो, तो कभी भी नींद नहीं आयेगी। समझा?

**Conditions Applied Very strictly